(5) √

8. संपत्ति और उसका मनोवैज्ञानिक आधार

~~शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन शब्द Property~~

Property शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन शब्द Propriatas से हुई है। जिसका अर्थ होता है 'अपना' या 'नजदीक' या 'समीप', अत: जो व्यक्ति का अपना है वही उसकी सम्पत्ति है। सम्पत्ति का प्रथम लक्षण है 'स्वामित्व' (Possession) स्वामित्व का अर्थ है पूर्ण अधिकार, वे सभी भौतिक या अभौतिक पदार्थ जिन पर अकेले अपना स्वामित्व हो, अधिकार का योग सम्पत्ति है।

संपत्ति पर व्यक्ति का अधिकार होता है तथा उसके अधिकार के रक्षा के लिए समाज कानून बनाता है। अत: सम्पत्ति के लिए सामाजिक स्वीकृति आवश्यक है। सामाजिक और वैधानिक अनुमोदनों के द्वारा उसकी रक्षा होती है।

संपत्ति व्यक्ति के उपभोग का साधन मात्र है किन्तु सम्पत्ति का उपभोग करते करते उसमें अपनत्व की भावना संमाहित हो जाती है और व्यक्ति का उससे संवेदनात्मक सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। इस प्रकार संपत्ति मनुष्य

के व्यक्तित्व का अंग हो जाती है।

संम्पति और धन में अन्तर होता है उन सभी चीजों को जिनसे मानव आवश्यकताओं की पूर्ति होती है धन कहा जाता है। किन्तु संम्पति के मूल्य का धन के मूल्य से अनुमान नहीं किया जा सकता। धन का अर्थ है उपभोग आवश्यकताओं की पूर्ति। और संम्पति का अर्थ है वस्तुओं के उपभोग का एकमात्र अधिकार

* संम्पति का मनोवैज्ञानिक आधार -

विद्वानों का कहना है कि प्राचीन समाज में वैयक्तिक सम्पति नहीं थी। संम्पति पर सभी व्यक्तियों का अधिकार था और सभी सब आवश्यकतानुसार उसका उपभोग करते थे। आखिर वैयक्तिक संम्पति का आधार मानव की मूल प्रवृतियाँ है। या यह मानव बुद्धि की उपज है। इस पर विद्वानों में मत भेद है। कुछ विद्वान संम्पति को समझौते का परिणाम मानते है। कोई इसे राज्य से विकसित एक संस्था मानते है। कोई इसे मानव की मूल प्रवृतियों पर आधारित मानते है।

संम्पति के रूप में मानव बुद्धि और भावनाओं के कारण परिवर्तन होता रहा है किन्तु इसका आधार प्राकृतिक है

मनुष्य में संचय की वृति स्वाभाविक है यह एक प्रकार की मूल वृति है जो पशुओं में भी पायी जाती है चीटियाँ, पशु-पक्षी, भविष्य के लिए भोजन इकट्ठा कर के रखते है और उन पर अपना एक मात्र अधिकार मानते है कभी चीजों के लिए उनमें आपस में लड़ाई होती है तथा सभी अपनी अधिकार की रक्षा करना चाहते है। इसी मूल वृति का विकास व्यक्ति में संम्पति के रूप में होता है। इस प्रकार संम्पति का आधार प्राकृतिक है। किन्तु यही इसकी एकमात्र आधार नहीं है जिस वस्तु से हमारे आवश्यकताओं की पूर्ति होती है उस वस्तु के प्रति व्यक्ति आसक्त हो जाता है और मनुष्य का उससे भावात्मक भावनात्मक सम्बन्ध हो जाता है मनुष्य की आवश्यकताएँ सम्पति की चाह का कारण है। कभी कभी परिवार आदि संस्थाएँ संम्पति की चाह का कारण होती है। कभी संम्पति बौद्धिक चिंतन का भी परिणाम होती है मत संम्पति का आधार कोई एक मूल

मूल प्रवृत्ति नहीं मानी जा सकती।
सम्पत्ति का आधार प्राकृतिक आवश्यक है किन्तु कभी कभी संपत्ति से इतनी आशक्ति हो जाती है कि उसे साधन नहीं बल्कि साध्य मान लिया जाता है। उस स्थिति में सम्पत्ति का अर्जन संपत्ति के लिए होता है उपभोग के लिए नहीं। सम्पत्ति के कारण व्यक्ति में बड़प्पन की भावना या व्यक्ति के अहम भाव की अभिव्यक्ति का साधन हो जाती है तथा ऐसा होने पर संपत्ति के दुष्परिणाम उत्पन्न होते हैं।
संपत्ति का सम्बंध व्यक्ति से है व्यक्ति की आत्मतुष्टि करने में सम्पत्ति सहायक है। जिसके पास संपत्ति है उसे वैभव और शक्ति भी है अतः संपत्ति आत्मस्थापन और आत्मप्रदर्शन का साधन भी है। समाज के मूल्यों में उपभोग का समाज के प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है इन मूल्यों की प्राप्ति के लिए संपत्ति स्वतः सुख नहीं है पर सुख या आनंद, सम्पत्ति पर निर्भर है। इस प्रकार संपत्ति मानव स्वभाव पर ~~मानव स्वभाव~~ पर आधारित है।

अतः यह संस्था किसी न किसी रूप में अभी तक कायम है।

—x—